



GARVI GUJARAT

RNI No. GUJHIN/2011/39228

અહમદાબાદ સે પ્રકાશિત દૈનિક

વર્ષ : 15

અંક : 334

दि. 07.04.2026,

मंगलवार

पाना : 04

किंमत : 00.50 पैसा

इतिहास रचते हुए राज्यसभा में शपथ लेने वाले 19 सांसदों में पहली बार LGBTQ+ सांसद मेनका गुरुस्वामी

नई दिल्ली। भारतीय संसदीय इतिहास में आज एक नया अध्याय जुड़ गया है। राज्यसभा के सभापति श्री सीपी राधाकृष्णन ने राज्यसभा कक्ष में नवनिर्वाचित और पुनर्निर्वाचित 19 सदस्यों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस शपथ ग्रहण समारोह का मुख्य आकर्षण बनकर उभरीं डॉ मेनका गुरुस्वामी, जिन्होंने पश्चिम बंगाल से तुण्मूल कांग्रेस (टीएमसी) की सांसद के रूप में शपथ ली और देश की पहली ऐसी सांसद बन गईं, जिन्होंने सार्वजनिक रूप से अपनी पहचान एक क्वीर (LGBTQ+) के रूप में साझा की।

51 वर्षीय डॉ मेनका गुरुस्वामी का राज्यसभा पहुंचना न केवल राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी इसे ऐतिहासिक माना जा रहा है। उनका नाम मुख्य रूप से साल 2018 की उस ऐतिहासिक कानूनी जीत के लिए जाना जाता है, जिसमें उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में धारा 377 के खिलाफ लड़ाई लड़ी और

समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर करवाया। इस फैसले ने देशभर में समलैंगिक अधिकारों को वैध और सुरक्षित बनाने में अहम भूमिका निभाई। अब जब वह राज्यसभा की सदस्य बन चुकी हैं, तो उम्मीद है कि वे संसद में संवैधानिक मूल्यों, समानता और नागरिक अधिकारों की आवाज को और अधिक मजबूती देंगी। शपथ लेने के तुरंत बाद गुरुस्वामी ने स्पष्ट कहा कि वह संसद में समानता और भेदभाव रहित मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम करेंगी और संविधान की रक्षा में कोई समझौता नहीं करेंगी।

आज के समारोह में कुल 19 सदस्यों ने शपथ ली। इनमें राजनीति के दिग्गज नेताओं के साथ नए चेहरे भी शामिल थे। शपथ लेने वाले सदस्यों में श्री रामदास बंधु आठवले, श्रीमती माया चिंतामन इचनते, श्री शरदचंद्र पवार, श्री रामराव सखाराम वडकुते, डॉ ज्योति नागनाथ वाघमारे, श्री क्रिस्टोफर मणिकम, डॉ अंजुमणि



रामदास, श्री कॉन्स्टेंटिन रवींद्रन, श्री एल के सुधीश, डॉ एम थंबीदुरई, श्री तिरुचि शिवा, श्री बाबुल सुब्रिया बराल, डॉ मेनका गुरुस्वामी, श्री राजीव कुमार, सुश्री रुक्मिणी मलिक (कोयल मलिक), श्री विस्वजीत सिन्हा, श्री संतुल मिश्रा, श्री दिलीप कुमार रे और श्री मन्मोहन सामल शामिल हैं। इस तरह इस बार के शपथ ग्रहण समारोह ने राजनीति में नए और

पुराने दोनों प्रकार के अनुभवों को एक साथ संसद तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण संदेश दिया। समारोह में भाषाई और क्षेत्रीय विविधता की भी झलक साफ दिखाई दी। शपथ लेने वाले 19 सदस्यों में से 6 सदस्यों ने तमिल में, 4 ने बंगाली में, 3 ने मराठी में, 3 ने ओडिया में, 2 ने हिंदी में और 1 सदस्य ने अंग्रेजी में शपथ ली। इससे यह साबित

होता है कि भारत के लोकतंत्र में 'विविधता में एकता' की भावना कितनी गहरी है। इस बार राज्यसभा में तमिलनाडु से 6, महाराष्ट्र से 5, पश्चिम बंगाल से 5 और ओडिशा से 3 सदस्य चुने गए हैं। यह भौगोलिक और भाषाई विविधता संसद में देश के हर हिस्से की आवाज को प्रतिनिधित्व देने का अवसर प्रदान करती है। इस ऐतिहासिक अवसर पर संसद के वरिष्ठ नेता और मंत्रीगण भी उपस्थित रहे। संसदीय कार्य और अल्पसंख्यक कार्य मंत्री श्री किरन रिजिजू, जनजातीय कार्य मंत्री श्री जुअल ओराम, राज्यसभा के महासचिव श्री पीसी मोदी और सचिवालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी शपथ ग्रहण समारोह में मौजूद थे। उनकी मौजूदगी ने इस समारोह को और अधिक गरिमामय और लोकतांत्रिक परंपरा का प्रतीक बना दिया। डॉ मेनका गुरुस्वामी का राज्यसभा पहुंचना न केवल LGBTQ+ समुदाय के लिए एक उम्मीद और प्रेरणा का प्रतीक

है, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता और समावेशिता को भी दर्शाता है। आज का दिन यह साबित करता है कि समाज की विविध पहचानें संसद तक पहुंच सकती हैं और राजनीतिक निर्णयों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकती हैं। गुरुस्वामी का उदाहरण आने वाले समय में कई अन्य सामाजिक समूहों और अल्पसंख्यक समुदायों के लिए मार्गदर्शक साबित होगा। उनकी शपथ ग्रहण के बाद ही यह स्पष्ट हो गया कि संसद में अब एक नई ऊर्जा और दृष्टिकोण आएगा। उनकी कानूनी पृष्ठभूमि और सामाजिक मुद्दों पर सक्रिय दृष्टिकोण से उम्मीद है कि संसद में संवैधानिक मूल्यों, मानवाधिकारों और सामाजिक न्याय को लेकर बहस और निर्णय और अधिक प्रभावशाली होंगे। गुरुस्वामी को लेकर बहस और निर्णय और अधिक प्रभावशाली होंगे। गुरुस्वामी को लेकर बहस और निर्णय और अधिक प्रभावशाली होंगे। गुरुस्वामी को लेकर बहस और निर्णय और अधिक प्रभावशाली होंगे।

इस शपथ ग्रहण समारोह ने यह संदेश भी दिया कि भारत का लोकतंत्र अब केवल पारंपरिक राजनीतिक संरचनाओं तक सीमित नहीं रहा। यह अब समाज के विविध और नए प्रतिनिधियों को भी मंच प्रदान कर रहा है। आज के दिन मेनका गुरुस्वामी की उपस्थिति ने यह दिखा दिया कि क्वीर समुदाय के लोग भी संसद में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा सकते हैं और कानून बनाने और नीति निर्धारण की प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। और कानून बनाने और नीति निर्धारण की प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। और कानून बनाने और नीति निर्धारण की प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभा सकते हैं।

समारोह न केवल एक औपचारिक प्रक्रिया था, बल्कि यह भारतीय संसद में सामाजिक न्याय, समानता और विविधता की दिशा में एक ऐतिहासिक और प्रतीकात्मक कदम भी था। मेनका गुरुस्वामी का राज्यसभा में प्रवेश और LGBTQ+ समुदाय का प्रतिनिधित्व न केवल संसद के भीतर, बल्कि समाज में भी समावेशिता और समानता की भावना को मजबूत करेगा। आज का दिन भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में हमेशा याद रखा जाएगा। 19 सांसदों के इस अवसर पर मीडिया और जनता ने भी काफी उत्सुकता दिखाई। सामाजिक मीडिया पर गुरुस्वामी के शपथ ग्रहण को लेकर कई पोस्ट और प्रतिक्रियाएं साझा की गईं। अनेक लोग इसे समाज में समानता और समावेशिता की दिशा में एक बड़ा कदम बता रहे हैं। वहीं कई विश्लेषक इसे भारतीय लोकतंत्र की मजबूती और उसकी सामाजिक प्रगतिशीलता का प्रतीक मान रहे हैं। कुल मिलाकर, आज का शपथ ग्रहण

राहुल गांधी का केंद्र सरकार पर हमला: एलपीजी संकट को कोविड की तरह ही 'नीति रहित' बताया

नई दिल्ली। देश में एलपीजी गैस संकट के बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सोमवार को केंद्र सरकार पर निशाना साधा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एलपीजी गैस नीतियों की आलोचना करते हुए कहा कि सरकार ने इस संकट को ठीक उसी तरह संभाला जैसे उन्होंने कोविड-19 महामारी के दौरान किया था। राहुल गांधी का आरोप है कि सरकार की इस नीति का पूरा बोझ गरीब और मध्यम वर्ग के आम नागरिकों पर डाला गया है।

लोकसभा में विपक्ष के नेता ने कहा कि हर संकट में सबसे ज्यादा असर गरीबों पर पड़ता है और यही सवाल उठता है कि क्यों हर बार सामान्य जनता सबसे पहले परेशान होती है। उन्होंने यह भी कहा कि जनता को चुन नहीं रहना चाहिए और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठानी चाहिए। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, "मोदी जी ने कहा था कि हम एलपीजी संकट को उसी तरह संभालेंगे जैसे कोविड को संभाला था। और उन्होंने वास्तव में वैसा ही किया। कोविड की तरह — नीति का अभाव, केवल बढ़ी-बढ़ी घोषणाओं से भरा हुआ, और सारा बोझ गरीबों पर डाला गया।"



राहुल गांधी ने इस संकट में प्रवासी मजदूरों की मुश्किलों को भी उजागर किया। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन 500-800 रुपये की मजदूरी कमाने वाले मजदूरों के लिए खाना पकाने की गैस पूरी तरह महंगी हो गई है। रात में घर लौटते मजदूरों के पास चूल्हा जलाने के लिए भी पर्याप्त पैसे नहीं होते। उनका कहना है कि सरकार की नीतियों में इस वर्ग की चिंताओं को शामिल करना जरूरी है, लेकिन बड़े-बड़े घोषणाओं और बयानबाजी के अलावा किसी ठोस नीति का अभाव दिखे। कांग्रेस नेता ने यह भी सवाल उठाया

कि क्या केंद्र सरकार केवल चुनावी वादों और घोषणाओं पर निर्भर रहकर जनता की वास्तविक समस्याओं को हल करने का दावा कर सकती है। उनके अनुसार, एलपीजी गैस की महंगाई और वितरण की असमानता ने गरीबों और मध्यवर्गीय परिवारों की रोजगारी को ज़िंदगी को बेहद प्रभावित किया है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि राहुल गांधी की यह टिप्पणी सीधे तौर पर केंद्र की सामाजिक और आर्थिक नीतियों पर सवाल खड़ा करती है। खासकर उन वर्गों के लिए जो महामारी और आर्थिक संकट दोनों में सबसे ज्यादा प्रभावित हुए, उनकी आवाज अब और मजबूत हो गई है। एलपीजी संकट के मुद्दे को लेकर राहुल गांधी ने साफ कर दिया कि वह इस विषय को लोकसभा और सार्वजनिक मंचों पर लगातार उठाएंगे। इस बयान के बाद राजनीतिक हलचल

तेज हो गई है। विपक्ष ने सरकार पर लगातार दबाव डालना शुरू कर दिया है कि एलपीजी गैस की कीमतों और वितरण की समस्याओं को तुरंत सुलझाया जाए। वहीं, सरकार की तरफ से फिलहाल कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है। राहुल गांधी के आरोपों ने एक बार फिर एलपीजी संकट को चुनावी और सार्वजनिक बहस का विषय बना दिया है। विशेषज्ञों का कहना है कि एलपीजी गैस की बढ़ती कीमतें और असमान वितरण न केवल आर्थिक संकट का संकेत हैं बल्कि यह सीधे तौर पर गरीब और मजदूर वर्ग के जीवन स्तर को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे में राहुल गांधी का केंद्र सरकार पर यह हमला जनता के बीच बढ़ती नाराजगी और असंतोष को उजागर करता है। कुल मिलाकर, राहुल गांधी ने एलपीजी गैस संकट को कोविड-19 महामारी के समय की नीतियों की तरह ही 'नीति रहित' बताया और गरीबों पर पड़े बोझ को उजागर किया। उनका यह बयान सरकार की सामाजिक और आर्थिक जिम्मेदारियों पर सवाल खड़ा करता है और आगामी समय में राजनीतिक बहस का केंद्र बने रहने की संभावना है।

ईरान पर हवाई हमले: 25 से अधिक लोग मरे विश्वविद्यालय और ऊर्जा क्षेत्र भी निशाने पर

तेहरान। सोमवार को इजरायल और अमेरिका की संयुक्त सेनाओं द्वारा ईरान पर किए गए हवाई हमलों में 25 से अधिक लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हुए। रविवार से लेकर सोमवार तक पूरे देश के विभिन्न शहरों में हमलों की धमक सुनाई दी। इन हवाई हमलों में अहम शहर अहवाज, बंदर लेंगेह, करज, शिराज और तेहरान के आसपास के क्षेत्र शामिल हैं। बंदर लेंगेह और कोंग शहरों में हुए हमलों में कम से कम छह लोग मारे गए, जबकि 17 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए। तेहरान में राजधानी पर लगातार बमबारी और विमानों की आवाजें सुनाई दीं, जिससे पूरे शहर में भय और दहशत का माहौल बना रहा। आजादी स्ववायर के पास एक हवाई हमले के बाद उड़ता काला धुआं पूरी जगह फैल गया और लोगों में असुरक्षा की भावना पैदा हो गई। अधिकारियों ने बताया कि तेहरान के दक्षिण-पश्चिम में इस्लामशहर के पास हवाई हमले में 15 लोग मारे गए। सरकारी अखबार 'ईरान डेली' के अनुसार, कोम शहर के एक रिहायशी इलाके में हुए हमले में पांच और लोग मरे, जबकि अन्य शहरों में हुए हमलों में छह लोगों की जान

गई। सरकारी टेलीविजन ने यह भी बताया कि तेहरान में एक घर पर हुए हवाई हमले में तीन और लोग मारे गए। इन हमलों में शामिल इलाकों में नागरिकों की सुरक्षा का कोई ठोस इंतजाम नहीं था, जिससे उनके जीवन को सीधा खतरा उत्पन्न हुआ। इजरायल और अमेरिका की सेनाओं ने तेहरान की शरीफ यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी को भी निशाना बनाया। ईरानी मीडिया के अनुसार, इन हमलों में यूनिवर्सिटी की कई इमारतें और कैम्पस के पास मौजूद नैचुरल गैस डिस्ट्रिब्यूशन साइट को भी नुकसान पहुंचा। यूनिवर्सिटी में इस समय कोई छात्र उपस्थित नहीं था, क्योंकि युद्ध के कारण देश के सभी स्कूल और कॉलेज ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से संचालित हो रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में कई देशों ने इस यूनिवर्सिटी पर निगरानी और प्रतिबंध लगाए हैं, क्योंकि इस ईरान के बैलिस्टिक मिसाइल प्रोग्राम और सैन्य अनुसंधान से जोड़कर देखा जाता है। यह प्रोग्राम देश की पैरामिलिट्री 'रिवोल्यूशनरी गार्ड' द्वारा नियंत्रित किया जाता है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसके लिए सतर्कता बरती जाती रही है।

सिर्फ ईरान ही नहीं, लेबनान के बेरूत के पूर्व में स्थित 'ऐन सादेह' शहर में भी हवाई हमला हुआ। इस हमले में लेबनानी फोर्सेज पार्टी के एक अधिकारी, उनकी पत्नी और एक अन्य महिला की मौत हुई। मेयर ने बताया कि पीड़ित लोग अपार्टमेंट के एक मंजिल नीचे थे, जिसे निशाना बनाया गया। मृतकों में स्थानीय पार्टी अधिकारी पियरे मोवाड और उनकी पत्नी फलाविया शामिल हैं। लेबनानी फोर्सेज के सांसद राजी अल हाज ने कहा कि हिज्बुल्लाह द्वारा घसीटे जाने के कारण यह युद्ध उनके लिए भारी कीमत का कारण बन रहा है और नागरिकों का जीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है। इस क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय समुदाय युद्ध विराम और स्थायी समाधान के लिए दबाव बनाने की कोशिशों में जुटा हुआ है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस संघर्ष के चलते खाड़ी क्षेत्र में तेल और गैस की आपूर्ति पर भी असर पड़ेगा। साउथ पार्स प्राकृतिक गैस क्षेत्र पर हमले के कारण वैश्विक ऊर्जा बाजार में कीमतों में तेजी आने की संभावना है। वहीं, ईरान और इसके पड़ोसी देशों में नागरिक और आर्थिक क्षति बढ़ रही है, जिससे मानवाधिकारों की गंभीर चिंता पैदा हो रही है।

ईरान पर हवाई हमलों में मौतों का आंकड़ा बढ़ा, गंभीर तबाही और अंतरराष्ट्रीय तनाव के बीच दुनिया चिंता में

तेहरान। सोमवार की रात ईरान में हुए बड़े पैमाने के हवाई हमलों ने देश के कई हिस्सों को तबाह कर दिया और इसके परिणामस्वरूप कम से कम 25 लोगों की मौत हो गई। इजरायल और अमेरिका की संयुक्त सेनाओं ने 'साउथ पार्स' प्राकृतिक गैस क्षेत्र, शरीफ यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों को निशाना बनाया। ईरान के प्रमुख शहरों अहवाज, बंदर लेंगेह, करज और शिराज में रातभर लगातार हमलों की आवाज गूंजती रही, जिससे राजधानी और आसपास के इलाकों में डर और भगदड़ मच गई।



अधिकारियों ने बताया कि तेहरान के दक्षिण-पश्चिम स्थित इस्लामशहर के पास हुए हवाई हमले में 15 लोग मारे गए। वहीं, कोम शहर के एक रिहायशी इलाके में पांच और लोगों की मौत हुई, जबकि अन्य शहरों में छह लोगों की जान चली गई। सरकारी मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, राजधानी में एक घर पर हुए हमले में तीन और लोगों की मौत हुई। इस हमले से आसपास के क्षेत्रों में घना धुआं और खलबली का माहौल बन गया। तेहरान की शरीफ यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी को भी हवाई हमलों में निशाना बनाया गया। यूनिवर्सिटी की इमारतों और कैम्पस के पास मौजूद नैचुरल गैस डिस्ट्रिब्यूशन साइट को भारी नुकसान पहुंचा। हालांकि, इस समय विश्वविद्यालय में कोई छात्र उपस्थित नहीं था क्योंकि देश में स्कूल और कॉलेज युद्ध और सुरक्षा कारणों से ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से संचालित हो रहे हैं। ईरानी मीडिया ने बताया कि पिछले वर्षों में कई अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों और निगरानी

के चलते इस यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यक्रमों को सेना और बैलिस्टिक मिसाइल प्रोग्राम से जोड़कर देखा गया है। साउथ पार्स प्राकृतिक गैस क्षेत्र को निशाना बनाना न केवल ऊर्जा आपूर्ति के लिहाज से गंभीर नुकसान है, बल्कि यह क्षेत्रीय और वैश्विक तेल एवं गैस बाजार पर भी प्रभाव डाल सकता है। ऊर्जा बुनियादी ढांचे को निशाना बनाने से ईरान की अर्थव्यवस्था पर और दबाव पड़ेगा और संकट की जड़ें और गहरी हो सकती हैं। सिर्फ ईरान ही नहीं, बल्कि लेबनान के बेरूत के पूर्व में 'ऐन सादेह' शहर में भी हवाई हमले हुए। इस हमले में लेबनानी फोर्सेज पार्टी के एक अधिकारी, उनकी पत्नी और एक अन्य महिला की मौत हुई। लेबनान में राजनीतिक और सैन्य दृष्टि से यह हमला हिज्बुल्लाह समर्थित लड़ाकों के खिलाफ किया गया माना जा रहा है। लेबनानी फोर्सेज पार्टी के सांसद राजी

हवाई हमले न केवल स्थानीय नागरिकों के जीवन के लिए खतरा है बल्कि वैश्विक ऊर्जा और आर्थिक स्थिरता को भी प्रभावित कर सकते हैं। साउथ पार्स प्राकृतिक गैस क्षेत्र पर हमला वैश्विक तेल और गैस की आपूर्ति श्रृंखला में संकट पैदा कर सकता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अस्थिरता और कीमतों में उछाल आने की संभावना है। तेहरान और अन्य शहरों में हमलों के कारण नागरिक जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ। लोग रातभर बमबारी और विमानों की आवाज से दहशत में रहे। कई परिवारों को अपने घर छोड़ने और सुरक्षित स्थानों पर शरण लेने को मजबूर होना पड़ा। अस्पताल और आपातकालीन सेवाओं पर अत्यधिक दबाव पड़ा, जबकि स्थानीय प्रशासन ने नागरिकों की सुरक्षा और राहत कार्यों को तेज करने की कोशिश की। इस पूरे घटनाक्रम ने खाड़ी और मध्य पूर्व क्षेत्र में तनाव को और बढ़ा दिया है। विशेषज्ञ चिंतावनी दे रहे हैं कि यदि इस संघर्ष को नियंत्रित नहीं किया गया, तो यह क्षेत्रीय युद्ध की स्थिति में बदल सकता है और इसके असर दुनिया भर में आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर महसूस किए जाएंगे। इस प्रकार, इजरायल और अमेरिका द्वारा ईरान पर किए गए हवाई हमलों ने न केवल इस क्षेत्र के राजनीतिक और सैन्य संतुलन को प्रभावित किया है, बल्कि स्थानीय नागरिकों की जान और जीविका को भी गंभीर संकट खड़ा किया है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने तुरंत संघर्ष विराम की मांग की है। संयुक्त राष्ट्र समेत कई वैश्विक संगठनों ने इस हमले की निंदा की है और मानवाधिकारों पर पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा शुरू की है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार के



गरवी गुजरात
हिन्दी



JioTV
CHENNAL NO. 2002



Jio Air Fiber



Jio Tv +



Jio Fiber



Daily Hunt



ebaba Tv



Dish Plus



DTH live OTT



Rock TV



Airtel



fire tv



Roku

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही गरवी गुजरात हिंदी चैनल देखिये

संपादकीय दवा के दर्द

खाड़ी क्षेत्र में अमेरिका, इसाइल और ईरान के बीच जारी तनाव अब केवल भू-राजनीतिक संघर्ष तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इसके प्रभाव ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों को अपनी चपेट में लेना शुरू कर दिया है। भारत का दवा उद्योग, जो विश्वभर में सस्ती और प्रभावी दवाओं की आपूर्ति के लिए जाना जाता है, इस संकट के कारण अभूतपूर्व दबाव का सामना कर रहा है। विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश और हरियाणा के फार्मा क्लस्टर पर इसका असर स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। भारत का दवा उद्योग बड़े पैमाने पर आयातित कच्चे माल पर निर्भर है, जिसमें एफ़्टिफ़ार्मास्यूटिकल इंटीग्रेटेड्स (API), सॉल्वेंट्स और पेट्रोकेमिकल डेरिवेटिव्स प्रमुख हैं। इन कच्चे मालों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा या तो सीधे पश्चिम एशिया से आता है या उन्हीं समुद्री मार्गों से होकर भारत पहुँचता है, जो वर्तमान संघर्ष से प्रभावित हैं। जैसे-जैसे इस क्षेत्र में अस्थिरता बढ़ रही है, जैसे-जैसे शिपिंग मार्गों पर जोखिम और लागत दोनों में वृद्धि हो रही है। जहाजों के लिए बीमा प्रीमियम बढ़ गए हैं, मार्ग बदलने पड़ रहे हैं और समय में देरी हो रही है, जिससे पूरी आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित हो रही है। इस व्यवधान का सीधा असर कच्चे माल की कीमतों पर पड़ा है। कई आवश्यक रसायनों और पेट्रोकेमिकल उत्पादों की कीमतों में 25 से 30 प्रतिशत तक की वृद्धि दर्ज की गई है। इसके साथ ही, पैकेजिंग सामग्री—जैसे प्लास्टिक बोतलें, कैप्सूल कवर और बिल्टरट्टर—को ज़ेनोपेट्रोलियम आधारित होतों है। उनकी लागत भी तेजी से बढ़ी है। परिणामस्वरूप, दवा निर्माण की कुल लागत में भारी इजाजत हुआ है। छोटे और मध्यम स्तर के उद्योग, जो पहले से ही सीमित लाभ मार्जिन पर काम करते हैं, इस बढ़ते खर्च को वहन करने में असमर्थ हो रहे हैं। हिमाचल प्रदेश का बड़ी-बरोटीवाल-नालागढ़ (BBN) क्षेत्र और हरियाणा के फार्मा हब देश के दवा उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इन क्षेत्रों में हजारों लघु एवं मध्यम इकाइयाँ कार्यरत हैं, जो घरेलू जरूरतों के साथ-साथ निर्यात के लिए भी दवाएँ तैयार करती हैं। लेकिन वर्तमान संकट ने इन इकाइयों के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया है। कई कंपनियाँ उत्पादन घटाने को मजबूर हैं, जबकि कुछ ने अस्थायी रूप से अपने संयंत्र बंद करने तक का निर्णय लिया है। इस संकट का एक और गंभीर पहलू श्रमिकों से जुड़ा है। दवा उद्योग में बड़ी संख्या में प्रवासी श्रमिक कार्यरत हैं, जो उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और अन्य राज्यों से आकर इन क्षेत्रों में काम करते हैं। वर्तमान स्थिति में, जब ईंधन की कीमतें बढ़ रही हैं और एलपीजी जैसे आवश्यक संसाधनों की आपूर्ति बाधित हो रही है, इन श्रमिकों का जीवन कठिन होता जा रहा है। बढ़ती महंगाई और रोजगार की अनिश्चितता ने उनके भीतर असुरक्षा की भावना पैदा कर दी है। इसका असर उनके कार्य प्रदर्शन और उत्पादनकता पर भी पड़ रहा है। उद्योग के लिए यह दोहरी चुनौती बन गई है—एक ओर कच्चे माल की कमी और महंगाई, और दूसरी ओर श्रमिकों की अस्थिरता। इन दोनों कारकों ने उत्पादन प्रक्रिया को बाधित कर दिया है। इसके अलावा, वैश्विक परिवहन लागत में वृद्धि ने निर्यात को भी प्रभावित किया है। भारतीय दवाओं की प्रतिस्पर्धात्मकता अंतरराष्ट्रीय बाजार में कम हो रही है, जिससे निर्यात में गिरावट की आशंका बढ़ गई है। यह स्थिति भारत की औद्योगिक संरचना की एक महत्वपूर्ण कमजोरी को उजागर करती है—आयात पर अत्यधिक निर्भरता। विशेष रूप से API के क्षेत्र में भारत स्वयं समय से चीन और अन्य देशों पर निर्भर रहा है। हालाँकि, सरकार ने इस दिशा में सुधार के लिए कई पहलें की हैं, जैसे उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजनाएँ और API पार्कों की स्थापना, लेकिन इनका प्रभाव अभी सीमित है। वर्तमान संकट इस बात की ओर संकेत करता है कि भारत को आत्मनिर्भरता की दिशा में और अधिक ठोस कदम उठाने होंगे। घरेलू स्तर पर कच्चे माल के उत्पादन को बढ़ावा देना, वैकल्पिक आपूर्ति स्रोतों की तलाश करना और आपूर्ति श्रृंखला को विविध बनाना अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ ही, श्रमिकों के लिए बेहतर सामाजिक सुरक्षा और जीवन-यापन की सुविधाएँ सुनिश्चित करना भी जरूरी है, ताकि वे इस प्रकार के संघर्ष में स्थिर रह सकें। अंततः, खाड़ी क्षेत्र में चल रहा यह संघर्ष भारत के लिए एक चेतावनी है कि वैश्विक घटनाओं का प्रभाव अब सीमाओं तक सीमित नहीं रहता। एक दूरस्थ युद्ध भी देश की अर्थव्यवस्था, उद्योग और समाज पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। दवा उद्योग, जो मानव जीवन से सीधे जुड़ा है, इस चुनौती के केंद्र में है। यह समय रहते आवश्यक सुधार नहीं किए गए, तो भविष्य में इस प्रकार के संकट और भी गंभीर परिणाम ला सकते हैं।

मौजूदा माहौल में प्रवासियों को आश्रस्त करना जरूरी

“

यदि ईरान व अमेरिका-इसाइल युद्ध लंबा चला तो आयातित तेल व उर्वरक और महंगे होंगे। वहीं जीडीपी अनुमानों में बदलाव के संकेत भी आर्थिकी पर असर डाल सकते हैं। प्रवासियों को मुश्किलों से उबरने में मदद चाहिये। फिलहाल रसोई गैस की समस्या से प्रवासी अपने गांव लौट रहे हैं। पहले उन्हें वहीं ठहरने को आश्वस्त करें, जिसे वे घर कहते हैं।

प्रेरणा

जब धर्म बना मानवता का प्रहरी: गुरु तेग बहादुर का अद्वितीय बलिदान और भारत की आत्मा

भारतीय इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिनका जीवन किसी एक धर्म, समुदाय या कालखंड तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वे समूची मानवता के लिए प्रेरणा बन जाते हैं। गुरु तेग बहादुर का नाम उन्हीं अमर विभूतियों में लिया जाता है, जिनका बलिदान केवल एक घटना नहीं बल्कि धर्म, स्वतंत्रता और मानवीय अधिकारों की रक्षा का शाश्वत संदेश है। सत्रहवीं शताब्दी का भारत एक गहरे संकट के दौर से गुजर रहा था। औरंगजेब जैसे धार्मिक असहिष्णुता का विस्तार हो चुका था और विशेष रूप से हिन्दुओं पर जबर्न धर्म परिवर्तन का दबाव बढ़ता जा रहा था। जजिया कर के रूप में आर्थिक बोझ, मंदिरों के विध्वंस के आदेश और धार्मिक अनुष्ठानों पर रोक ने समाज को भय और असुरक्षा के वातावरण में धकेल दिया था। गुरु तेग बहादुर का जीवन केवल व्यक्तित्व साधना तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें समाज और मानवता के प्रति गहरी संवेदना भी थी। उन्होंने अपने समय के सामाजिक और धार्मिक संकटों को समझा और उसके समाधान के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। जब कश्मीर के हिन्दुओं पर अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया और उन्हें जबरन इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाध्य किया जाने लगा, तब कश्मीरी पंडितों का एक समूह उनकी शरण में आया। उन्होंने अपनी व्यथा सुनाई और धर्म की रक्षा के लिए संझपात की प्रार्थना की। गुरु तेग बहादुर ने इस पुकार को केवल एक निवेदन नहीं, बल्कि अपना कर्तव्य माना। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि हम किसी भी रस्ता हो। गुरु तेग बहादुर का व्यक्तित्व इसी आवश्यकता का उत्तर बनकर सामने आया। अमृतसर में जन्मे गुरु तेग बहादुर बचपन से ही गंभीर, शांत और आत्मनिष्ठ में लीन रहने वाले बालक थे। जहाँ अन्य बच्चे खेल-कूद में मग्न रहते

थे, वहीं वे एकान्त में बैठकर ध्यान और मनन में समय बिताते थे। यह स्वभाव उनके भीतर की उस आध्यात्मिक गहराई को दर्शाता था, जिसने आगे चलकर उन्हें एक महान संत और मार्गदर्शक के रूप में स्थापित किया। उनके जीवन में आध्यात्मिकता और पंचक्रम का अद्भुत संगम था। उन्हीं युद्धकला में भी दक्षता प्राप्त की और कस्तूरपुर के युद्ध में अपने साहस का परिचय देते हुए 'तेग बहादुर' की उपाधि अर्जित की। गुरु तेग बहादुर का जीवन केवल व्यक्तित्व साधना तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें समाज और मानवता के प्रति गहरी संवेदना भी थी। उन्होंने अपने समय के सामाजिक और धार्मिक संकटों को समझा और उसके समाधान के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। जब कश्मीर के हिन्दुओं पर अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया और उन्हें जबरन इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाध्य किया जाने लगा, तब कश्मीरी पंडितों का एक समूह उनकी शरण में आया। उन्होंने अपनी व्यथा सुनाई और धर्म की रक्षा के लिए संझपात की प्रार्थना की। गुरु तेग बहादुर ने इस पुकार को केवल एक निवेदन नहीं, बल्कि अपना कर्तव्य माना। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि हम किसी भी रस्ता हो। गुरु तेग बहादुर का व्यक्तित्व इसी आवश्यकता का उत्तर बनकर सामने आया। अमृतसर में जन्मे गुरु तेग बहादुर बचपन से ही गंभीर, शांत और आत्मनिष्ठ में लीन रहने वाले बालक थे। जहाँ अन्य बच्चे खेल-कूद में मग्न रहते

थे, वहीं वे एकान्त में बैठकर ध्यान और मनन में समय बिताते थे। यह स्वभाव उनके भीतर की उस आध्यात्मिक गहराई को दर्शाता था, जिसने आगे चलकर उन्हें एक महान संत और मार्गदर्शक के रूप में स्थापित किया। उनके जीवन में आध्यात्मिकता और पंचक्रम का अद्भुत संगम था। उन्हीं युद्धकला में भी दक्षता प्राप्त की और कस्तूरपुर के युद्ध में अपने साहस का परिचय देते हुए 'तेग बहादुर' की उपाधि अर्जित की। गुरु तेग बहादुर का जीवन केवल व्यक्तित्व साधना तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें समाज और मानवता के प्रति गहरी संवेदना भी थी। उन्होंने अपने समय के सामाजिक और धार्मिक संकटों को समझा और उसके समाधान के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। जब कश्मीर के हिन्दुओं पर अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया और उन्हें जबरन इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाध्य किया जाने लगा, तब कश्मीरी पंडितों का एक समूह उनकी शरण में आया। उन्होंने अपनी व्यथा सुनाई और धर्म की रक्षा के लिए संझपात की प्रार्थना की। गुरु तेग बहादुर ने इस पुकार को केवल एक निवेदन नहीं, बल्कि अपना कर्तव्य माना। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि हम किसी भी रस्ता हो। गुरु तेग बहादुर का व्यक्तित्व इसी आवश्यकता का उत्तर बनकर सामने आया। अमृतसर में जन्मे गुरु तेग बहादुर बचपन से ही गंभीर, शांत और आत्मनिष्ठ में लीन रहने वाले बालक थे। जहाँ अन्य बच्चे खेल-कूद में मग्न रहते

West Bengal में कानून व्यवस्था की स्थिति के बारे में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और सुप्रीम कोर्ट की राय मतदाताओं को जरूर जाननी चाहिए

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के बंगाल दौरे के दौरान जो कुछ हुआ, उस पर उनकी तीखी नाराजगी, मालदा की शर्मनाक घटना पर उच्चतम न्यायालय की कड़ी और असहज कर देने वाली टिप्पणियाँ और कूच बिहारी की जनसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का प्रचंड प्रहार यह साबित करने के लिए काफी है कि पश्चिम बंगाल में कानून व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। देखा जाये तो हालात इतने बदतर हैं कि देश की संवैधानिक प्रमुख राष्ट्रपति और न्याय के सर्वोच्च मंदिर उच्चतम न्यायालय की चिंता एक ही दिशा में इशारा कर रही है कि पश्चिम बंगाल आज अराजकता और भय के माहौल में जी रहा है। हम उन्का बलिदान केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक है। आज जब हम उनके जीवन को स्मरण करते हैं, तो यह केवल श्रद्धांजलि नहीं बल्कि एक संकल्प भी होना चाहिए कि हम उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारेंगे। हम सत्य, न्याय और धर्म के मार्ग पर चलेंगे और किसी भी प्रकार के अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाएंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगा और यही उनके बलिदान का वास्तविक सम्मान होगा।

अभियान

मां गंगा: आस्था, जीवन और सभ्यता की अनंत प्रवाहमान धारा

भारत की आत्मा को यदि किसी एक प्रतीक में समेटना हो, तो वह निस्संदेह मां गंगा ही होगी। गंगा केवल एक नदी नहीं, बल्कि भारतीय जीवन का आधार, संस्कृति की धुरी और आध्यात्मिक चेतना की प्रवाहमान शक्ति है। अनादि काल से यह पवित्र धारा ने केवल भू-भाग को सिंचित करती आई है, बल्कि मनुष्य के भीतर की आस्था, विश्वास और मोक्ष की आकांक्षा को भी निरंतर जीवित रखे हुए है। गंगा के बिना भारतीय सभ्यता की कल्पना अधूरी है, क्योंकि इसी के किनारे वेदों का उच्चारण हुआ, ऋषियों ने तप किया और मानव जीवन के गूढ़तम रहस्यों को समझने का प्रयास किया गया। गंगा की महिमा केवल भौतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी अद्वितीय है। ऋग्वेद, रामायण, महाभारत से लेकर अनेक पुराणों और गंगा लहरी जैसे ग्रंथों में इसकी महत्ता का विस्तार से वर्णन मिलता है। गंगा को 'मां' कहकर

पुकारना भारतीय संस्कृति की उस भावनात्मक गहराई को दर्शाता है, जिसमें प्रकृति को भी मातृत्व का दर्ज दिया गया है। यह वही धारा है, जिसे स्पर्श करने मात्र से पापों का नाश और आत्मा की शुद्धि का विश्वास किया जाता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं को जल स्रोतों में 'जाह्नवी गंगा' के रूप में अभिव्यक्त किया है, जो इसकी दिव्यता को और अधिक पृच्छता है। गंगा का पृथ्वी पर अवतरण भी एक अद्भुत कथा से जुड़ा हुआ है, जो त्याग, तपस्या और संकल्प का प्रतीक है। राजा सगर के साठ हजार पुत्रों के उद्धार के लिए उनके वंशज राजा भगीरथ ने कठोर तप किया। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर गंगा ने ब्रह्मलोक से पृथ्वी पर आने की सहमति दी, लेकिन उनकी प्रचंड धारा को धारण करना किसी के लिए संभव नहीं था। तब भगवान शिव ने अपनी जटाओं में गंगा को समाहित कर उसकी वेगवती धारा को नियंत्रित किया और धीरे-धीरे पृथ्वी पर

प्रवाहित किया। इस प्रकार गंगा का अवतरण केवल एक प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि दिव्य शक्ति और मानवीय प्रयास का अद्भुत संगम है। गंगात्री वह पवित्र स्थल है, जहाँ गंगा ने सबसे पहले पृथ्वी को स्पर्श किया। यह स्थान ने केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि प्रकृति की अनुपम सुंदरता का भी अद्भुत उदाहरण है। गोमुख से निकलकर गंगा की धारा आगे बढ़ती है और अपने मार्ग में अनेक छोटी-बड़ी नदियों को समाहित करती हुई गंगा सागर तक पहुँचती है। इस यात्रा के दौरान यह नदी केवल जल का प्रवाह नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति और परंपराओं का भी संगम बन जाती है। गंगा के मार्ग में आने वाले विभिन्न प्रयाग, जैसे कि देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग और अन्य संगम स्थल, भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान रखते हैं। इन संगमों को केवल नदियों का मिलन नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन का प्रतीक माना जाता है।

त्रिवेणी संगम, जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का मिलन होता है, वह तो आस्था का सबसे बड़ा केंद्र है, जहाँ करोड़ों श्रद्धालु स्नान कर अपने जीवन को धन्य मानते हैं। गंगा का महत्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। यह भारत की कृषि व्यवस्था की रीढ़ भी है। इसके जल से करोड़ों हेक्टेयर भूमि सिंचित होती है, जिससे देश की खाद्य सुरक्षा से निकलकर गंगा की धारा आगे बढ़ती है और अपने मार्ग में अनेक आर्थिक गतिविधियों के केंद्र हैं, बल्कि सांस्कृतिक विविधता के भी प्रतीक हैं। वाराणसी, प्रयागराज, हरिद्वार जैसे शहर गंगा के कारण ही विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। गंगा के किनारे ही भारतीय सभ्यता का विकास हुआ। यहाँ ऋषियों ने वेदों की रचना की, उपनिषदों की व्युत्पत्ति की और जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझने का प्रयास किया। यही कारण है कि गंगा को केवल एक नदी नहीं, बल्कि ज्ञान और चेतना की धारा भी कहा जाता है। इसकी लहरों में इतिहास

की गूँज सुनाई देती है और इसकी धारा में संस्कृति की निरंतरता दिखाई देती है। गंगा की पूजा केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का माध्यम है। गंगोत्री धाम में मां गंगा की पूजा प्राकृतिक और विग्रह दोनों रूपों में की जाती है। अक्षय तृतीया से लेकर गोवर्धन पूजा तक यहाँ नियमित पूजा-अर्चना होती है, जो आस्था की निरंतरता को दर्शाती है। शीतकाल में जब गंगोत्री के कपाट बंद हो जाते हैं, तब गंगा की भोग भूमि मुखवा में स्थापित की जाती है, जहाँ श्रद्धालु उनकी पूजा करते हैं। आज के आधुनिक युग में, जब विकास और औद्योगिकरण की दौड़ तेज हो गई है, गंगा के अस्तित्व पर धूप, अतिक्रमण और जलवायु परिवर्तन जैसे कारकों ने इसकी निर्मलता को प्रभावित किया है। यह स्थिति केवल एक नदी के लिए नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और भविष्य के लिए भी

गंभीर चिंता का विषय है। गंगा को बचाना केवल पर्यावरण की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का भी कर्तव्य है। सरकार और समाज दोनों स्तरों पर गंगा को स्वच्छ और अचिरल बनाए रखने के प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन यह तभी संभव है जब हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी को समझे। गंगा केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि हमारी पहचान है, हमारी आस्था है और हमारे अस्तित्व का आधार है। अंततः, गंगा की महिमा शब्दों में बांधना संभव नहीं है। यह वह धारा है, जो युगों से बह रही है और आने वाले युगों तक बहती रहेगी। इसके जल में केवल जीवन नहीं, बल्कि आत्मा की शांति और मोक्ष का मार्ग भी छिपा है। मां गंगा हमें यह सिखाती है कि जीवन में निरंतरता, शुद्धता और समर्पण कितना महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि गंगा केवल एक नदी नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की अनंत, अचिरल और अमर धारा है।

अहमदाबाद छात्रावास में फूड पॉइजनिंग का गंभीर मामला 57 लड़कियां बीमार, 18 अस्पताल में भर्ती, प्रशासन सतर्क

अहमदाबाद। मेमनगर क्षेत्र के सौराष्ट्र पटेल छात्रावास में रविवार को हुई फूड पॉइजनिंग की घटना ने नगर प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग के लिए अलर्ट जारी कर दिया। छात्रावास में रह रही लगभग 900 छात्राओं में से 57 छात्राओं की अचानक तबीयत बिगड़ गई। इनमें से 18 छात्राओं की हालत गंभीर होने के कारण उन्हें स्टर्लिंग अस्पताल में भर्ती कराया गया, जबकि बाकी को निगरानी में रखा गया। अहमदाबाद नगर निगम (एएमसी) के चिकित्सा अधिकारी डॉ. भाविन सोलंकी ने बताया कि सभी छात्राओं की हालत फिलहाल स्थिर है और उन्हें डॉक्टरों के देखरेख में रखा गया है।

डॉ. सोलंकी ने बताया कि बीमार छात्राओं में मुख्य लक्षण पेट दर्द, उल्टी और दस्त जैसे थे। प्रारंभिक जांच में यह पता चला कि कुछ लड़कियों ने छात्रावास में बने भोजन का सेवन किया, जबकि कुछ ने

बाहर का खाना भी खाया था। खासतौर पर, छात्राओं ने पानी पूरी और दाबेली जैसी फास्ट फूड चीजें खाई थीं। लक्षण सबसे पहले शनिवार रात को दिखाई दिए थे और तब छात्राओं को सामान्य दवा दी गई थी, लेकिन जैसे-जैसे उनकी संख्या बढ़ी, उन्हें तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया। नगर प्रशासन की टीम ने छात्रावास में भोजन और पानी के नमूने एकत्र किए हैं, जिन्हें जांच के लिए भेजा गया है। अधिकारी बता रहे हैं कि प्रारंभिक संकेतों से फूड पॉइजनिंग की वजह भोजन में मिलावट या किसी प्रकार के बैक्टीरिया संक्रमण की संभावना जताई जा रही है। लेकिन सटीक कारण की पुष्टि केवल विस्तृत जांच के बाद ही की जा सकती है।

छात्रावास प्रशासन ने बताया कि घटना के समय लगभग 900 छात्राएं वहां रह रही थीं। भोजन की गुणवत्ता और



स्वच्छता की जिम्मेदारी छात्रावास के प्रबंधन की थी। अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि भविष्य में ऐसे मामलों को

रोकने के लिए सभी छात्रावासों और हॉस्टलों में नियमित निगरानी और रैंडम जांच अनिवार्य की जाएगी।

इस दौरान एमसी की टीम ने छात्रावास के किचन, सानी की आपूर्ति और सभी खाने के सामग्री की जांच शुरू कर दी

है। अधिकारी यह भी कह रहे हैं कि छात्रों को खाने और पानी के माध्यम से होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए नगर निगम की ओर से लगातार सख्त कदम उठाए जा रहे हैं। स्टर्लिंग अस्पताल और अन्य नजदीकी अस्पतालों में भर्ती छात्राओं का इलाज चल रहा है। डॉक्टरों का कहना है कि फूड पॉइजनिंग के मामले में समय पर इलाज मिलना बहुत जरूरी है, अन्यथा यह गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। अस्पताल में सभी छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया जा रहा है और उन्हें आवश्यक दवा और समर्थन मुहैया कराया जा रहा है। इस घटना ने शहर में छात्रावासों और विशेपज्ञों का कहना है कि बड़ी संख्या में छात्राओं के बीमार होने का कारण भोजन में गंदगी या खराब सामग्री हो सकती है।

प्रशासन ने चेतावनी जारी की है कि ऐसे किसी भी मामले को हल्के में नहीं लिया जाएगा और भविष्य में नियमित निरीक्षण और निगरानी बढ़ाई जाएगी। इस बीच, छात्राओं के परिवार और आम जनता में चिंता बढ़ी है। अधिकारियों ने आश्वासन दिया है कि सभी प्रभावित छात्राओं का उपचार जारी है और कोई भी छात्रा गंभीर खतरों में नहीं है। जांच रिपोर्ट आने के बाद ही यह स्पष्ट हो पाएगा कि बीमारी का मुख्य कारण छात्रावास का भोजन था या बाहर का खाना। नगर प्रशासन ने कहा है कि इस घटना से शिक्षा और स्वास्थ्य संस्थानों में खाने की सुरक्षा को लेकर गंभीर ध्यान देने की आवश्यकता है। भविष्य में इस तरह की घटनाओं से बचने के लिए एमसी ने हर बड़े हॉस्टल और छात्रावास में स्वच्छता और स्वास्थ्य सुरक्षा मानकों का सख्ती से पालन करने की हिदायत दी है। विशेषज्ञों का मानना है कि फूड

पॉइजनिंग जैसी घटनाओं को रोकने के लिए केवल भोजन की गुणवत्ता पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि पानी की शुद्धता, रसोई के उपकरणों की सफाई और भोजन बनाने वाले स्टाफ की प्रशिक्षण भी जरूरी है। प्रशासन ने सभी छात्रावासों को निर्देश दिए हैं कि वे नियमित स्वास्थ्य जांच कराएं और किसी भी असामान्य लक्षण को गंभीरता से लें। इस घटना ने अहमदाबाद में बड़े छात्रावासों और हॉस्टलों में भोजन और स्वच्छता के मुद्दे पर नई बहस को जन्म दिया है। नगर प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग अब छात्रावासों में निगरानी बढ़ाने, भोजन और पानी के नमूनों की जांच करने और आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाने के लिए सक्रिय हो गए हैं। यह घटना शहर के शिक्षा संस्थानों में खाने की गुणवत्ता और सुरक्षा पर प्रशासन की जवाबदेही को भी उजागर करती है।

चूरू में सड़क हादसा: तेज रफ्तार ट्रक और बाइक की भिड़ंत में तीन युवकों की मौत, एक घायल

चूरू। राजस्थान के चूरू जिले के छपरा थाना क्षेत्र में सोमवार शाम एक भीषण सड़क हादसे ने पूरे इलाके को दहला दिया। सुजानगर से छापरा की ओर जा रही पल्सर बाइक और तेज रफ्तार ट्रक के आमने-सामने टकराने से बाइक सवार तीन युवकों की मौत पर ही दर्दनाक मौत हो गई। हादसे में एक अन्य युवक गंभीर रूप से घायल हुआ, जिसे इलाज के लिए तुरंत जयपुर रेफर किया गया। घटना की जानकारी मिलते ही छपरा थानाध्यक्ष इंदरलाल और बीदासर डिप्टी एसपी नेमीचंद मौके पर पहुंचे। वहां की भीषण परिस्थितियों और अफरा-तफरी के बीच स्थानीय लोगों ने घायल युवक की मदद की और उसे सुजानगर के राजकीय बगड़िया अस्पताल पहुंचाया। पुलिस ने तीनों मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए राजकीय बगड़िया उप जिला अस्पताल की मोर्चरी में सुरक्षित रखा। मृतकों की पहचान छापरा निवासी



सांवरमल (23), भागीरथ (27) और बीरबल मेघवाल (24) के रूप में हुई हैं। गंभीर रूप से घायल युवक ईश्वर को बेहतर इलाज के लिए जयपुर रेफर किया गया है। हादसे के तुरंत बाद ट्रक ड्राइवर ट्रक छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने मामले में एफआईआर दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। हादसे के कारणों की अभी तक पुष्टि नहीं हो पाई है, लेकिन शुरुआती जांच से यह पता चला है कि ट्रक अत्यधिक तेज गति में था।

स्थानीय लोग और परिजन हादसे की गंभीरता पर गहरा दुख व्यक्त कर रहे हैं। मृतक के परिवारों का रो-रोकर बुरा हाल है। घटना के बाद इलाके में गुस्से का माहौल है और पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए हैं। अधिकारियों का कहना है कि सड़क सुरक्षा और वाहन गति नियमों का पालन न होने के कारण ऐसे हादसे लगातार बढ़ रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए सड़क सुरक्षा अभियान तेज किए जाएंगे और ट्रक और अन्य भारी वाहन चालकों के लिए विशेष निगरानी रखी जाएगी। हादसे ने स्थानीय प्रशासन और पुलिस को भी अलर्ट कर दिया है। पुलिस ने इलाके में जांच तेज कर दी है और ट्रक ड्राइवर की जल्द गिरफ्तारी के लिए सभी संभावित

रास्तों पर नाकेबंदी शुरू कर दी है। वहीं सड़क दुर्घटना विशेषज्ञों का मानना है कि पल्सर बाइक और भारी ट्रक के आमने-सामने टकराव में गंभीर परिणाम होना स्वाभाविक है, खासकर तब जब ट्रक तेज गति से चल रहा हो। स्थानीय नागरिक भी सड़क पर तेज रफ्तार और सुरक्षा नियमों की अनदेखी के प्रति चिंता जता रहे हैं। इस हादसे ने यह सवाल भी उठाया है कि मुख्य सड़क मार्गों पर ट्रकों की गति को नियंत्रित करने और बाइक चालकों के लिए सुरक्षा उपायों को लागू करने की तत्काल जरूरत है। इस घटना के बाद प्रशासन ने मृतकों के परिवारों को तत्काल राहत देने की घोषणा की है और घायल युवक ईश्वर के बेहतर इलाज के लिए जयपुर भेजा गया है। वहीं पुलिस और सड़क सुरक्षा अधिकारी भी इलाके में आगामी दिनों में रात बढ़ाने और सड़क सुरक्षा मानकों की कड़ी निगरानी करने की योजना बना रहे हैं।

सूरत के गोदादरा आईटीएम मार्केट में बिल्डर महावीर जैन ने 1.5 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की शिकायत दर्ज कराई है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत शहर में रातोरात बिल्डर उभर रहे हैं। सूरत शहर में किसानों की जमीनों पर भूमि विलेख या कच्चे की रसीदें लिखकर और उन पर बाजार निर्माण के बोर्ड लगाकर लोगों को उगने की कई घटनाएं सामने आ रही हैं। सूरत शहर में ज्यादातर बाजार निर्माण कार्य तेजी से हो रहा है। और चूँकि बिल्डर भी रातोरात उभर रहे हैं, इसलिए धोखाधड़ी की घटनाएं भी बढ़ रही हैं। ऐसा ही एक मामला 2017 में सामने आया, जब सूरत शहर के गोदादरा इलाके में आईटीएम मार्केट के निर्माण की घोषणा हुई, तो राजस्थान के मूल निवासी और सूरत के दुग्धाल जिले के पर्वतविद्या निवासी नरेश ने दलावत के माध्यम से पांचवीं मंजिल पर 2700 वर्ग फुट का फ्लैट बुक कराया। इसके लिए उन्होंने बिल्डर महावीर जैन को तीन किस्तों में 1.5 करोड़ रुपये का भुगतान किया। यह बिल्डर महावीर जैन कभी सूरत शहर के वराह रोड इलाके के हीराबाग में एशियन पेंट के रंग बेचने के कारोबार करता था। फिर उसने चोड़रोड रोड पर अरिहंत ज्वैलर्स का कारोबार शुरू

किया। निर्माण व्यवसाय में करोड़ों रुपये कमाए जा सकते हैं और करोड़ों रुपये की धोखाधड़ी भी आसानी से हो सकती है। इस व्यक्ति ने गोदादरा क्षेत्र में आईटीएम मार्केट का निर्माण शुरू करवाया था। कई सै लोगों ने इसमें बुकिंग करवाई। इस वजह से 3-4 साल तक मार्केट की खुदाई तक नहीं हो पाई। इसके बाद, बिल्डर महावीर जैन ने मार्केट का निर्माण पूरा होते ही सूरत नगर निगम से बीयूसी सर्टिफिकेट प्राप्त कर लिया और बुकिंग करवाने वालों से बकाया राशि वसूलना शुरू कर दिया। शिकायतकर्ता नरेश के अनुसार, मार्केट में बुकिंग के तौर पर 1.5 करोड़ रुपये (डेढ़ करोड़ रुपये) देने और डायरी में राशि प्राप्त होने की लिखित एंटी होने के बावजूद, बिल्डर महावीर जैन ने नरेश की सहमति या जानकारी के बिना नरेश की आश्चर्य की बात नहीं होगी। वार्ड नंबर 19 के मतदाताओं को गुमराह और धोखा दे रहे हैं। दरअसल, इस तरह की झूठी घोषणा करना अदालत की अवमानना है। जब तक अदालत में मामले का निपटारा नहीं हो जाता, झूठी घोषणा करना अदालत की अवमानना माना जाता है। विजय चौमल के टिकट पर चुने जा रहे हैं और सूरत नगर निगम में वार्ड नंबर 19 के मतदाताओं का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इसलिए, यदि आगामी नगर निगम चुनावों में भाजपा विजय चौमल को टिकट देती है, तो यह आश्चर्य की बात नहीं होगी कि उन्हें न केवल वार्ड नंबर 19 के मतदाताओं बल्कि भाजपा पार्टी के अन्य कार्यकर्ताओं के

कि यह उनकी स्थायी संपत्ति बन जाएगी। लेकिन नरेश को कैसे पता चलता कि महावीर जैन उनके 1.5 करोड़ रुपये (डेढ़ करोड़ रुपये) का लंबे समय तक इस्तेमाल करेगे और फिर पल्ला झाड़ लेंगे? नरेश से बार-बार संपर्क करने की कोशिश करने के बावजूद, बिल्डर महावीर जैन का पता नहीं चल पा रहा है। जब नरेश आईटीएम 1.5 करोड़ रुपये (डेढ़ करोड़ रुपये) की रकम फंस जाना के बाद इस व्यापारी को पुलिस में शिकायत दर्ज कराने के लिए मजबूर होना पड़ा। नरेशभाई के साझेदारों और रिश्तेदारों को 1.5 करोड़ रुपये (डेढ़ करोड़ रुपये) और संपत्ति दूसरों को बेचने के कारण मानसिक पीड़ा झेलनी पड़ी है और उन्हें महंगे अस्पतालों में इलाज कराना पड़ रहा है। साथ ही, बिल्डर महावीर जैन उन पर एंटीलिया ड्रूम, डायरीय या गौरवस्थ में फ्लैट खरीदने का दबाव डाल रहे हैं। इस तरह नरेशभाई के 1.5 करोड़ रुपये (डेढ़ करोड़ रुपये) फंस गए हैं, लेकिन और कितना पैसा फंसा हो सकता है? क्या इस मामले की जांच की जाएगी?

दर्ज किया है। रिश्तेदारों और दोस्तों से लिया गया पैसा ब्याज समेत वापस मांगा जा रहा है क्योंकि काफ़ी समय बीत चुका है। आमतौर पर पैसा सिर्फ 15 दिन या एक महीने के लिए उधार लिया जा सकता है। नरेशभाई को अपना कारोबार चलाने के लिए दुकान का किराया देना पड़ता है। इसलिए, 7-8 साल पहले जमा की गई 1.5 करोड़ रुपये (डेढ़ करोड़ रुपये) की रकम फंस जाना के बाद इस व्यापारी को पुलिस में शिकायत दर्ज कराने के लिए मजबूर होना पड़ा। नरेशभाई के साझेदारों और रिश्तेदारों को 1.5 करोड़ रुपये (डेढ़ करोड़ रुपये) और संपत्ति दूसरों को बेचने के कारण मानसिक पीड़ा झेलनी पड़ी है और उन्हें महंगे अस्पतालों में इलाज कराना पड़ रहा है। साथ ही, बिल्डर महावीर जैन उन पर एंटीलिया ड्रूम, डायरीय या गौरवस्थ में फ्लैट खरीदने का दबाव डाल रहे हैं। इस तरह नरेशभाई के 1.5 करोड़ रुपये (डेढ़ करोड़ रुपये) फंस गए हैं, लेकिन और कितना पैसा फंसा हो सकता है? क्या इस मामले की जांच की जाएगी?

बांसवाड़ा में सरकारी टीचर बना गैंगस्टर: कर्ज चुकाने के लिए व्यापारियों से 1.40 करोड़ की फिरौती मांगी

बांसवाड़ा। राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में एक सरकारी स्कूल शिक्षक ने कर्ज चुकाने के लिए जिस तरह से व्यापारियों को धमकाया और उनसे 1.40 करोड़ रुपये की फिरौती मांगी, वह पूरे इलाके में सनसनी मचा गया है। राजतालाब थाना पुलिस ने आरोपी शिक्षक विकेश कुमार कमोल को गिरफ्तार किया है। आरोपी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चुडादा में सेकंड क्लास का गणित शिक्षक है, लेकिन कर्ज में डूबने के कारण उसने पूरी तरह अपराधिक रास्ता अपना लिया। मामले का खुलासा तब हुआ जब 30 मार्च 2026 को आरोपी ने दो व्यापारियों को हाथ से लिखे पत्र भेजे। आरोपी ने एक व्यापारी की दुकान के शटर के नीचे पत्र डालकर और दूसरे के फार्महाउस पर कर्मचारी के जरिए धमकी पहुंचाई। पत्रों में उसने खुद को बड़ा गैंगस्टर बताकर बताया कि अगर पैसे नहीं दिए गए तो व्यापारियों और उनके परिवार की संपत्ति को नुकसान पहुंचाया जाएगा।



उसने पहले व्यापारी से 90 लाख रुपये और दूसरे से 50 लाख रुपये की मांग की और उन्हें भयान घाटी में पानी की टंकी के पास नीचे के पेड़ के नीचे रकम रखने के निर्देश दिए। डरे हुए व्यापारियों ने आगले दिन पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी के निर्देशन में विशेष टीम के पेट्रोलिंग ऑफिसरों ने विशेष जांच टीम गठित की गई। पुलिस ने वैज्ञानिक और दूसरी जगह चांदी के पायजंब खरीदने शहर के लगभग 300 सीसीटीवी कैमरों की फुटज खंगाली और आरोपी के आने-जाने के पूरे रूट पैथ को तैयार किया। इसके साथ ही स्टेशनरी की दुकानों और अपराधिक साक्ष्य

की मदद से आरोपी की पहचान पुख्ता की गई। आरोपी को उसके गांव टिब्बा महडूडी से हिरासत में लिया गया। पूछताछ में यह चौकाने वाली जानकारी सामने आई कि शिक्षक होने के बावजूद विकेश कुमार ऑनलाइन गेमिंग का शौक रखने के कारण लाखों रुपये हार चुका था और भारी कर्ज में डूबा हुआ था। लेनदारों के दबाव से बचने के लिए उसने व्यापारियों को लुटने की साजिश रची। आरोपी ने अपने लक्ष्य को पहले से रोकें किया था। उसने व्यापारी की आर्थिक स्थिति और परिवार की जानकारी जुटाने के लिए विभिन्न बहाने बनाए—एक जगह खार खरीदने का बहाना और दूसरी जगह चांदी के पायजंब खरीदने का बहाना इस्तेमाल किया। पुलिस ने वारदात में इस्तेमाल की गई मोटोसाइकिल भी बरामद कर ली है। इसके अलावा, आरोपी के पास से धमकी भरे पत्र और अन्य अपराधिक साक्ष्य

भी जब्त किए गए हैं। पुलिस अभी आरोपी से आगे की पूछताछ कर रही है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि उसने इस योजना में अकेले काम किया या किसी और सहयोगी की मदद ली। इस मामले ने बांसवाड़ा की बहार फिर से सरकारी कर्मचारियों की नैतिक जिम्मेदारी और सामाजिक दायित्वों पर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय प्रशासन और पुलिस अधिकारियों का कहना है कि इस तरह की घटनाएं समाज के लिए घिंता का विषय हैं, खासकर जब एक शिक्षक जैसी जिम्मेदार भूमिका निभाने वाला व्यक्ति अपराध की ओर झुक जाए। विशेषज्ञ टीम ने बताया कि पुलिस की त्वरित कार्रवाई और तकनीकी उपकरणों के इस्तेमाल से बड़ी रकम की फिरौती की योजना को समय रहते नाकाम किया गया। अधिकारियों का कहना है कि यह घटना छात्रों और समाज के लिए एक चेतावनी है कि कर्ज और व्यक्तिगत दबाव कभी भी व्यक्ति को अपराध के रास्ते पर नहीं ले जाना चाहिए।

रुपये में 14 पैसे की बढ़त: RBI के हस्तक्षेप से मिला मजबूती का सहारा

नई दिल्ली। वैश्विक बाजारों में जारी अस्थिरता और उतार-चढ़ाव के बीच भारतीय रुपया सोमवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 14 पैसे मजबूत होकर 93.04 (अस्थायी) पर बंद हुआ। हाल के हफ्तों में घरेलू मुद्रा पर दबाव देखने को मिल रहा था, लेकिन भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के त्वरित हस्तक्षेप और घरेलू शेयर बाजारों में आठ तेजी ने रुपया मजबूत होने में अहम भूमिका निभाई। विश्लेषकों के अनुसार, RBI ने विदेशी मुद्रा बाजार में सक्रिय हस्तक्षेप किया, जिससे संयुक्त बाजार और आक्रामक बिकवाली पर नियंत्रण पाया गया। रिजर्व बैंक की ओर से लगातार डॉलर की बिक्री और घरेलू मुद्रा बाजार में स्थिरता बनाए रखने की रणनीति का असर रुपया बाजार में साफ दिखाई दिया। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर RBI समय पर हस्तक्षेप नहीं करता, तो रुपये में गिरावट और अधिक तेज हो सकती थी। घरेलू इक्विटी बाजार में भी निवेशकों के

मनोबल में वृद्धि हुई। बीएसई सेंसेक्स 74,106 और निफ्टी 50 22,968 के स्तर पर बंद हुए। यह तेजी घरेलू निवेशकों और विदेशी संस्थान निवेशकों (FIIs) के भरोसे का संकेत देती है, जिसने रुपये को और मजबूती दी। विशेषज्ञों का मानना है कि शेयर बाजारों में सकारात्मक रुझान मुद्रा बाजार में सीधे असर डालता है क्योंकि निवेशकों की धारणा और जोखिम उठाने की क्षमता पर असर पड़ता है। हालांकि, रुपये की मजबूती को कई वैश्विक बाजार और घरेलू चुनौतियों ने सीमित रखा। कच्चे तेल की ऊंची कीमतें अभी भी अर्थव्यवस्था के लिए चिंता का विषय बनी हुई हैं। ब्रेट कूड का भाव 107 डॉलर प्रति बैरल के आसपास बना हुआ है। विश्लेषकों का कहना है कि हॉर्मुज जलडमरूमध्य में जारी तनाव और वैश्विक तेल आपूर्ति पर दबाव रुपये पर प्रतिकूल असर डाल सकता है। विशिष्ट निवेशकों की बिकवाली का दबाव भी अब तक कायम है। पिछले कारोबारी सत्र

में FIIs ने लगभग 9,900 करोड़ रुपये के शेयर बेचे। इस बिकवाली के कारण विदेशी मुद्रा बाजार में रुपये पर दबाव पड़ने की संभावना बनी हुई है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि विदेशी निवेशक लगातार बिकवाली करते रहे, तो घरेलू मुद्रा की मजबूती अस्थायी रह सकती है। अन्य कारणों पर भी नजर बनी हुई है। अमेरिकी डॉलर के मजबूत स्थिति, अंतरराष्ट्रीय ब्याज दरों में बदलाव, और निवेशकों की धारणा और जोखिम उठाने की क्षमता पर असर पड़ता है। हालांकि, रुपये की मजबूती को कई वैश्विक बाजार और घरेलू चुनौतियों ने सीमित रखा। कच्चे तेल की ऊंची कीमतें अभी भी अर्थव्यवस्था के लिए चिंता का विषय बनी हुई हैं। ब्रेट कूड का भाव 107 डॉलर प्रति बैरल के आसपास बना हुआ है। विश्लेषकों का कहना है कि हॉर्मुज जलडमरूमध्य में जारी तनाव और वैश्विक तेल आपूर्ति पर दबाव रुपये पर प्रतिकूल असर डाल सकता है। विशिष्ट निवेशकों की बिकवाली का दबाव भी अब तक कायम है। पिछले कारोबारी सत्र

बिकवाली पर नियंत्रण रखने के उपायों पर भी ध्यान देना जरूरी है। कुल मिलाकर, सोमवार को रुपये की 14 पैसे की बढ़त और बाजार में स्थिरता RBI के हस्तक्षेप और घरेलू शेयर बाजारों की मजबूती के कारण संभव हो पाई। लेकिन विश्लेषकों चेतावनी दे रहे हैं कि वैश्विक तेल कीमतों की ऊंची दर, विदेशी निवेशकों की बिकवाली और भू-राजनीतिक अस्थिरता जैसी चुनौतियां अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुई हैं। अगर इन पर नियंत्रण नहीं रखा गया, तो रुपये की मजबूती अस्थायी रह सकती है। इस बीच, निवेशक और कारोबारी भी नजरें अगले कारोबारी सत्र पर टिका रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि रुपये में मजबूती बनी रहने के लिए RBI की सावधानीपूर्ण नीति, घरेलू इक्विटी बाजारों की स्थिरता और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में संतुलन जरूरी है। केवल इन कारकों के सहै मिश्रण से ही भारतीय रुपया दीर्घकालिक रूप से मजबूती बनाए रख सकता है।

वार्ड 19 के मतदाताओं की ओर से विजय चौमल के खिलाफ भाजपा का विरोध बढ़ता जा रहा है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। पेट्रोल, डीजल और गैस की बढ़ती कीमतों और परिणामस्वरूप होने वाली कमी के साथ-साथ देश भर में दुर्घटनाएँ, बेरोजगारी और अपराध के बीच, आगामी एएमसी चुनाव भारतीय जनता पार्टी के लिए एक बड़ा झटका साबित हो सकते हैं यदि दो कार्यकाल के लिए चुने गए विजय चौमल को प्रतिस्थापित नहीं किया जाता है। भाजपा के ऐसे ही विवादित चेहरों में से एक हैं विजय चौमल, जो पिछले दो कार्यकाल से वार्ड नंबर 19 अंजना-दुग्धाल से निर्वाचित हो रहे हैं। विजय चौमल पिछले दस वर्षों से भाजपा के टिकट पर चुने जा रहे हैं और सूरत नगर निगम में वार्ड नंबर 19 के मतदाताओं का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इसलिए, यदि आगामी नगर निगम चुनावों में भाजपा विजय चौमल को टिकट देती है, तो यह आश्चर्य की बात नहीं होगी कि उन्हें न केवल वार्ड नंबर 19 के मतदाताओं बल्कि भाजपा पार्टी के अन्य कार्यकर्ताओं के

विरोध का भी सामना करना पड़े। विजय चौमल के खिलाफ रिश्तत मांगने का मामला, केस नंबर 90/2020, सूरत की अदालत में चल रहा है। इस मामले की पिछली समय सीमा 04/04/2026 थी और अगली समय सीमा 02/05/2026 है। जिसमें विजय चौमल स्वयं अपने चुनाव जीतने की घोषणा करके वार्ड के मतदाताओं को गुमराह और धोखा दे रहे हैं। दरअसल, इस तरह की झूठी घोषणा करना अदालत की अवमानना है। जब तक अदालत में मामले का निपटारा नहीं हो जाता, झूठी घोषणा करना अदालत की अवमानना माना जाता है। विजय चौमल के टिकट पर चुने जा रहे हैं और सूरत नगर निगम में वार्ड नंबर 19 के मतदाताओं का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इसलिए, यदि आगामी नगर निगम चुनावों में भाजपा विजय चौमल को टिकट देती है, तो यह आश्चर्य की बात नहीं होगी कि उन्हें न केवल वार्ड नंबर 19 के मतदाताओं बल्कि भाजपा पार्टी के अन्य कार्यकर्ताओं के

जो आरएसएस संघ में अपने गुरु की सिफारिश पर भाजपा का टिकट लेकर पिछले दो कार्यकाल से वार्ड नंबर 19 का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, अगर उन्हें दोबारा चुनाव में टिकट मिलता है तो उन्हें कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा और भाजपा का उन सीटों पर भी हारना कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी। वार्ड नंबर 19 के मतदाताओं में विजय चौमल के प्रति विरोध इतना बढ़ गया है। हालांकि, अगर आरएसएस के अगुआ विजय चौमल को टिकट देने के लिए पार्टी पर दबाव डालते हैं, तो आरएसएस नेताओं को भी जनविरोध का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए, यह निर्णिवदा है कि विजय चौमल के प्रति स्थानीय लोगों में उठ रहा विरोध आग बनकर भाजपा को झुलसा देगा। लेकिन अगर विजय चौमल को जीत की माला के बजाय करावी हार का सामना करना पड़े तो आश्चर्य की बात नहीं होगी। अगर वार्ड मतदाताओं के विरोध के बावजूद विजय

चौमल को उम्मीदवार बनाया जाता है, तो ऐसी खबरें हैं कि अन्य निर्दलीय

उम्मीदवार भी उनके खिलाफ चुनाव मैदान में उतरेंगे।

पश्चिम रेलवे - रतलाम मंडल	
संख्या: W/623/5/1/NTM	दिनांक: 02.04.2026
ई-टेंडरिंग नोटिस	
मण्डल रेल प्रबंधक/मण्डल कार्यालय (कार्यलेखा शाखा) पश्चिम रेलवे, रतलाम भारत के राष्ट्रपति की और से निम्नलिखितकार्य के लिये 'खुली निविदा' ई-निविदा के माध्यम से वेबसाइट www.ireps.gov.in पर आमंत्रित करते है- विवरण इस प्रकार है- क्र.सं.: 1. ई-टेंडरिंग संख्या: RTM-2025-26-164R. कार्य का नाम: Ratlam Division - Providing cast in situ boundary wall between SPBG-UJN, UJN-PAWASA,UJN-VRG,FTD Total 7.87 km. in connection simhashtha 2028.अनुमानित लागत: रु. 6,05,95,800.62. बयाना राशि: रु. 12,11,900/-, कार्य समाप्त अवधि: 08 माह। क्र.सं.: 2. ई-टेंडरिंग संख्या: RTM-2025-26-164R. कार्य का नाम: Execution of Work in RTM Division -(Composite Work-Civil+ Electrical). 1. Ratlam Division - Civil Work in C/with Upgradation and Replacement of Telecom Passenger Amenities at 09 Stations (Simhashtha 2028). 2. Ujain - Civil Work in C/with -Upgradation and Replacement of Telecom Passenger Amenities and Various Facilities in Connection of Simhashtha 2028.अनुमानित लागत: रु. 1,70,77,184.77. बयाना राशि: रु. 3,41,600/-, कार्य समाप्त अवधि: 10 माह। अनुमानित मात्रा सभी डेंडर के लिए: As per tender schedule. ऊपर दिए गए सभी डेंडर के लिए वेबसाइट पर अपलोड करने की तिथि: 02.04.2026. ऊपर दिए गए सभी डेंडर के लिए निविदा खुलने की तिथि: 27.04.2026. विस्तृत निविदा सूचना, अहला शर्तें एवं अन्य शर्तें वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है।	
SPAN/5/1/531	हमें फॉलो करें: facebook.com/WesternRly हमें ट्वीट करें: X.com/WesternRly

सूरत में सूदखोरी का आतंक: 90 लाख का कर्ज चुकाने के बाद भी व्यापारी पर दबाव, फिनाइल पीने से बची जान

सूरत। गुजरात के डायमंड सिटी सूरत में सूदखोरी और अवैध व्याजखोरी का एक दर्दनाक मामला सामने आया है, जिसमें व्यापारिक समुदाय और आम नागरिकों के बीच चिंता की लहर पैदा कर दी है। अडाजन पाटिया इलाके के 48 वर्षीय कपड़ा व्यापारी अल्लाफ अशरफ ओरावाला ने पिछले दिनों व्याजखोरी की मानसिक प्रताड़ना और लगातार धमकियों से तंग आकर फिनाइल पी लिया, लेकिन समय रहते उनके दोस्तों ने उन्हें बचा लिया। घटना ने एक बार फिर सूरत में फल-फूल रहे अवैध व्याजखोरी के काले कारोबार की पोल खोल दी है और यह सवाल खड़ा कर दिया है कि किस तरह एक सफल व्यापारी तीन गुना ज्यादा राशि चुकाने के बाद भी मानसिक आतंक और सामाजिक अपमान का शिकार हो सकता है। अल्लाफ अशरफ ओरावाला लंबे समय से कपड़ा व्यवसाय में जुड़े हुए थे और



फरवरी 2025 में उन्होंने अपने भाई और उसके बिजनेस पार्टनर के कहने पर जुनैद युनुस ओरावाला नामक व्यक्ति से 90 लाख रुपये का ब्याज पर कर्ज लिया था। प्रारंभ में यह राशि उन्हें व्यवसाय के विस्तार और आपातकालीन जरूरतों को पूरा करने के लिए लगी थी, लेकिन समय के साथ यह कर्ज उनके लिए मानसिक बोझ बन गया। परिवार के अनुसार, अल्लाफ भाई ने मूल कर्ज के अलावा लगभग 2.5 करोड़ रुपये ब्याज और अन्य शुल्कों के रूप में चुका दिए थे, यानी मूल राशि का लगभग तीन गुना। इसके बावजूद सूदखोरों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा और लगातार आर्थिक और मानसिक दबाव बनाया। व्यापारी के बेटे ने बताया कि दबाव इतना बढ़ गया था कि परिवार को अपनी संपत्तियां बेचनी पड़ीं। सूदखोर सरेंआम घर के बाहर आकर गाली-गलौज करते, रास्ते में रोककर मारपीट की धमकी देते और फोन पर लगातार मानसिक प्रताड़ना करते थे। इस लगातार तनावपूर्ण माहौल में अल्लाफ भाई ने सलाबतपुरा दरागाह के पास फिनाइल पीने का प्रयास किया, उनके दोस्तों ने समय रहते उन्हें देखा

सबसे बड़ी आर्थिक गलती थी। उन्होंने कहा कि उनके भाई और उसके बिजनेस पार्टनर के कहने पर उन्होंने यह कदम उठाया, और मूल कर्ज से कहीं अधिक राशि वसूलने के लिए उन्हें जबरन रसीदों पर हस्ताक्षर करने पड़े। उन्होंने मुख्य रूप से जुनैद युनुस ओरावाला को इस पूरे संकट का जिम्मेदार ठहराया। यह घटना सूरत के व्यापारिक समुदाय के लिए चेतवनी है कि कैसे अवैध व्याज और सूदखोरी का चक्र एक हंसते-खेलते परिवार को बर्बादी के कगार पर ला सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि अवैध व्याजखोरी और धमकियों के कारण व्यापारी मानसिक रूप से कमजोर हो जाते हैं और आर्थिक तौर पर भी मजबूरी की स्थिति में आ जाते हैं। अक्सर ऐसे मामलों में आरोपी स्वयं को कानूनी नियंत्रण से बाहर मानते हैं और पीड़ितों को सामाजिक और मानसिक प्रताड़ना के जरिए दबाव में लाते हैं। पुलिस ने मामलों को गंभीरता को देखते हुए जांच शुरू कर दी है। सुसाइड नोट, परिजनों के बयान और अन्य साक्ष्यों के आधार पर आरोपियों की पहचान की जा रही है। अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि दोषियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी और अवैध व्याजखोरी के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए संबंधित विभागों को सतर्क रहने के निर्देश दिए गए हैं। अल्लाफ अशरफ ओरावाला की घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि व्यापारिक

सफलता और आर्थिक स्थिति के बावजूद अवैध व्याजखोरी और सूदखोरों की मानसिक प्रताड़ना जीवन को बुरी तरह प्रभावित कर सकती है। इसके अलावा, यह मामला समाज के लिए भी चेतावनी है। अंततः, इस पूरी घटना ने यह दिखाया कि अवैध व्याजखोरी केवल आर्थिक अपराध नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर खतरा है। व्यापारी समुदाय और प्रशासन दोनों को मिलकर ऐसे अपराधों के खिलाफ कड़े कदम उठाने होंगे, ताकि किसी अन्य परिवार को इस तरह की त्रासदी का सामना न करना पड़े। यह मामला सूरत में व्यापारिक सूदखोरी की गंभीरता को उजागर करता है और यह संदेश देता है कि मानसिक प्रताड़ना और धमकियों से किसी को भी बचाने के लिए समय रहते उचित कार्रवाई आवश्यक है।

मुंबई सेंट्रल में ट्रेक कार्य के कारण ट्रेनों का शॉर्ट टर्मिनेशन

मुंबई सेंट्रल स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या 05 पर पूर्ण ट्रेक नवीनीकरण (CTR) कार्य के मद्देनजर 60 दिनों का ब्लॉक तकाल प्रभाव से लिया जा रहा है। इसके कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी। प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है :
1. ट्रेन संख्या 22946 ओखा-मुंबई सेंट्रल सौराष्ट्र मेल को तकाल प्रभाव से अगले आदेश तक दादर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट किया जाएगा।
2. 07 अप्रैल, 2026 से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22210 हजरत निजामुद्दीन-मुंबई सेंट्रल एक्सप्रेस को अगले आदेश तक प्रत्येक बुधवार एवं

पश्चिम रेलवे द्वारा टिकट चेकिंग में नया कीर्तिमान, वित्त वर्ष 2025-26 में प्राप्त किया 209.30 करोड़ का जुर्माना

पश्चिम रेलवे राजस्व संरक्षण सुनिश्चित करने तथा यात्रियों में अनुशासन बढ़ाने के क्षेत्र में निरंतर उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। वरिष्ठ वाणिज्य अधिकारियों के सक्रिय मार्गदर्शन में टिकट चेकिंग स्टाफ की अत्यंत प्रेरित टीम द्वारा मुंबई उपनगरीय लोकल ट्रेनों, लंबी दूरी की मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों, यात्री सेवाओं तथा हॉलिडे स्पेशल ट्रेनों में सघन टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया। इसका उद्देश्य राजस्व ह्रास को कम करना तथा यात्रा अनुशासन को सुदृढ़ करना रहा है। पश्चिम रेलवे द्वारा वित्त वर्ष 2025-26 में एक उल्लेखनीय उपलब्धि के रूप में बिना बुक किए गए सामान के मामलों सहित बिना टिकट एवं अनियमित यात्रा के कुल 32.74 लाख मामलों का पता लगाया गया। टिकट



जांच अभियानों के माध्यम से रिकॉर्ड 209.30 करोड़ का जुर्माना प्राप्त किया गया, जो लगभग 39% की वृद्धि दर्शाता है। उल्लेखनीय है कि रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित लक्ष्य 11 महीनों में ही प्राप्त कर लिया गया था। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञापित अनुसार, इस गति को बनाए रखते हुए मार्च 2026 माह में ही 2.87 लाख मामलों का पता लगाया गया, जिससे 18.25 करोड़ का जुर्माना प्राप्त किया गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 10% से अधिक की वृद्धि दर्शाता है। यह निरंतर प्रदर्शन पश्चिम रेलवे की वैध यात्रियों के हितों की रक्षा करने तथा बिना टिकट यात्रा पर अंकुश लगाने की

प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मुंबई उपनगरीय खंड में वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान बिना टिकट एवं अनियमित यात्रा के 11.60 लाख से अधिक मामलों का पता लगाया गया, जिससे 54.55 करोड़ का जुर्माना प्राप्त किया गया। मार्च माह में ही एक लाख मामलों का पता लगाया गया, जिससे 4.67 करोड़ प्राप्त की गई। श्री विनीत ने आगे बताया कि एसी लोकल ट्रेनों में सामान्य टिकट धारकों के अनधिकृत प्रवेश को रोकने के लिए नियमित रूप से औचक टिकट जांच अभियान चलाए जा रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप अप्रैल 2025 से मार्च 2026 की अवधि में ऐसे लगभग 1.3 लाख मामलों का पता लगाया गया तथा

4.18 करोड़ का जुर्माना प्राप्त किया गया, जो पिछले वर्ष के 2.10 करोड़ की तुलना में 99% से अधिक है। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों से अपील की गई है कि उचित टिकट के साथ यात्रा करें, अनियमित यात्रा से बचें तथा नियमों का पालन कर रेल प्रशासन का सहयोग करें। इन रिकॉर्ड उपलब्धियों के साथ पश्चिम रेलवे भारतीय रेल में टिकट जांच के क्षेत्र में नए मानक स्थापित करती जा रही है, जो राजस्व संरक्षण एवं यात्री अनुशासन के प्रति उभरी कर्मजो प्रतिबद्धता को दर्शाता है। निरंतर प्रयासों के माध्यम से परिचालन दक्षता बढ़ाने तथा वैध यात्रियों के लिए बेहतर एवं आरामदायक यात्रा वातावरण सुनिश्चित करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

सोना वायदा में 1367 रुपये और चांदी वायदा में 3000 रुपये का ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा 153 रुपये फिसला

मुंबई: देश के अग्रणी कमांडिटी डेवेलपर्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमांडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 118963.47 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमांडिटी वायदाओं में 25429.55 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमांडिटी ऑप्शंस में 93532.62 करोड़ रुपये का नॉनशाल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का अप्रैल वायदा 36072 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमांडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2977.89 करोड़ रुपये का हुआ। कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 16356.34 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा 148847 रुपये पर खूल्कर, ऊपर में 151390 रुपये और नीचे में 148298 रुपये पर पहुंचकर, 149680 रुपये के पिछले बंद के सामने 1367 रुपये या 0.91 फीसदी बढ़कर 151047 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-गिनी अप्रैल वायदा 968 रुपये या 0.81 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 120280 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल अप्रैल वायदा 136 रुपये या 0.91 फीसदी की तेजी के संग 15071



मेटल वर्ग में 2098.42 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा अप्रैल वायदा 15.35 रुपये या 1.33 फीसदी की तेजी के संग 1170.45 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता अप्रैल वायदा 1.3 रुपये या 0.4 फीसदी की तेजी के संग 324.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इसके सामने इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 2455 रुपये या 1.04 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 238100 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 2380 रुपये या 1.01 फीसदी बढ़कर 238139 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

► कमांडिटी वायदाओं में 25429.55 करोड़ रुपये और कमांडिटी ऑप्शंस में 93532.62 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 16356.34 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 36072 पॉइंट के स्तर पर

के भाव पर कारोबार कर रहा था। कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 11580.23 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 4776.11 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1605.93 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 302.14 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 10.07 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 176.11 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिनसे के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 5276.09 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1503.11 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 14.50 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 0.42 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। ओपन इंटरस्ट सोना के वायदाओं में 8005 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में

46799 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 26593 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 374424 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 52697 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7090 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 19391 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 75323 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 23353 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 38005 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स अप्रैल वायदा 36002 पॉइंट पर खूल्कर, 36101 के उच्च और 36000 के नीचेले स्तर को छूकर, 247 पॉइंट बढ़कर 36072 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमांडिटी ऑप्शंस और फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल अप्रैल 13500 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 48.7 रुपये की गिरावट के साथ 152.1 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एएमएबीटीयू 1.35 रुपये की बढ़त के साथ 13.8 रुपये हुआ। सोना अप्रैल 170000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 88 रुपये की बढ़त के साथ 598.5 रुपये

हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 10 रुपये की गिरावट के साथ 964 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 3.68 रुपये की बढ़त के साथ 18.11 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 330 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 15 पैसे की नरमी के साथ 4.84 रुपये हुआ। पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल अप्रैल 9000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 15 रुपये की बढ़त के साथ 368.7 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एएमएबीटीयू 1.6 रुपये की गिरावट के साथ 16.75 रुपये हुआ। सोना अप्रैल 120000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 22.5 रुपये की बढ़त के साथ 330 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 19.5 रुपये की गिरावट के साथ 458.5 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1150 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 7.36 रुपये की गिरावट के साथ 20.81 रुपये हुआ।

जैतलसर जंक्शन रेलवे स्टेशन 'अमृत भारत स्टेशन योजना' में शामिल सूरत रेलवे स्टेशन पर हाईटेक वॉटर मॉनिटरिंग सिस्टम, 24 घंटे नजर रखेगी सुरक्षा

भारतीय रेल के आधुनिकीकरण एवं यात्री सुविधाओं के सुदृढीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में रेलवे बोर्ड द्वारा पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल अंतर्गत जैतलसर जंक्शन रेलवे स्टेशन को 'अमृत भारत स्टेशन योजना' में शामिल करने की स्वीकृति प्रदान की गई है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने जानकारी देते हुए बताया कि जैतलसर जंक्शन स्टेशन के समग्र विकास हेतु आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी। इस उन्नयन से न केवल स्टेशन की आधारभूत संरचना में सुधार होगा, बल्कि यात्रियों को आधुनिक एवं उन्नत सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन में 'अमृत भारत स्टेशन योजना' के अंतर्गत जैतलसर जंक्शन का पुनर्विकास आधुनिक मानकों के अनुरूप किया जाएगा। प्रस्तावित कार्यों में उन्नत यात्री प्रतीक्षालय, स्वच्छता सुविधाएं, पार्किंग एरिया का विस्तार, स्टेशन भवन के अग्रभाग का सौंदर्यीकरण, नए कवरशेड, दिव्यांगजन अनुकूल आधुनिक शौचालय ब्लॉक, पेयजल बूथ एवं वाटर कुलर की



व्यवस्था, आधुनिक प्लेटफॉर्म, सुगम आवागमन व्यवस्था, डिजिटल सूचना प्रणाली, दिव्यांगजन अनुकूल सुविधाएं, पर्याप्त एवं उन्नत प्रकाश व्यवस्था तथा स्टेशन परिसर का सौंदर्यीकरण शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि भावनगर मंडल में 'अमृत भारत स्टेशन योजना' के अंतर्गत पूर्व में लगभग 119 करोड़ की लागत से 17 स्टेशनों पर विकास कार्य प्रगति पर है, जो लगभग पूर्णता की ओर है। अब जैतलसर जंक्शन के शामिल होने से इस योजना के अंतर्गत विकसित होने वाले स्टेशनों की संख्या बढ़कर 18 हो गई है। जैतलसर स्टेशन के पुनर्विकास हेतु 16.32 करोड़ की लागत स्वीकृत की गई है, जिससे योजना की कुल लागत बढ़कर 135.32 करोड़ हो गई है। इस पहल से यात्रियों को सुरक्षित, सुगम एवं आरामदायक यात्रा अनुभव प्राप्त होगा तथा क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को भी नई गति मिलेगी। भारतीय रेल द्वारा देशभर के प्रमुख स्टेशनों को आधुनिक स्वरूप प्रदान करने की दिशा में 'अमृत भारत स्टेशन योजना' एक महत्वपूर्ण एवं दूरदर्शी पहल है, जिसमें जैतलसर जंक्शन का चयन क्षेत्र के लिए एक वा विषय है।

सूरत। यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे ने सूरत रेलवे स्टेशन पर पानी भरने की प्रक्रिया की निगरानी के लिए पहली बार तकनीक का सहारा लिया है। अब स्टेशन पर "वॉटर वॉच स्मार्ट मॉनिटरिंग सिस्टम" लागू किया गया है, जिसके तहत अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर 15 हाई-रिजॉल्यूशन CCTV कैमरे लगाए गए हैं। इन कैमरों के जरिए ट्रेनों के कोचों में पानी भरने की पूरी प्रक्रिया 24 घंटे लगातार निगरानी में रहेगी। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, ये कैमरे हाई-रिजॉल्यूशन और नाइट विजन तकनीक से लैस हैं, जिससे दिन और रात दोनों समय स्पष्ट निगरानी संभव होगी। कैमरों को इस तरह एंगल किया गया है कि पाइपलाइन, वाटर फिलिंग प्वाइंट और ट्रेन के कोच एक साथ फ्रेम में दिखाई दें। इसका मकसद यह सुनिश्चित करना है कि ट्रेन के कोचों में पानी भरने की प्रक्रिया में कहीं कोई लापरवाही या गड़बड़ी न हो। इससे न केवल यात्रियों की सुविधा बढ़ेगी, बल्कि तकनीकी खामियों और मानव भूल



की संभावना भी कम होगी। पिछले समय में रेलवे को अक्सर यात्रियों से शिकायतें मिलती थीं कि कई कोचों में पर्याप्त पानी नहीं भरा गया या भरते समय प्रक्रिया में लापरवाही बरती गई। अब कंट्रोल रूम में बैठे अधिकारी रियल टाइम में हर गतिविधि पर नजर रख सकते हैं और किसी भी गड़बड़ी की स्थिति में तुरंत कार्रवाई कर सकते हैं। इस स्मार्ट सिस्टम का एक बड़ा फायदा पानी की बर्बादी रोकना भी है। अगर कहीं पाइपलाइन से लीकेज हो रहा हो या पानी ओवरफ्लो हो रहा हो, तो कैमरे तुरंत इसे कैप्चर कर लेंगे। इससे न सिर्फ पानी की बचत होगी, बल्कि किसी तकनीकी खराबी

का पता भी तुरंत चल जाएगा। इसके अलावा, कैमरों के जरिए वाटर पाइपलाइन के आसपास अनधिकृत लोगों की आवाजाही और संदिग्ध गतिविधियों पर भी नजर रखी जाएगी, जिससे सुरक्षा व्यवस्था और मजबूत होगी। सूरत रेलवे स्टेशन पहले से ही CCTV निगरानी के लिए जाना जाता है। स्टेशन पर करीब 40 से अधिक हाई-रिजॉल्यूशन सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं, जो स्टेशन परिसर में होने वाली गैर-कानूनी गतिविधियों और लोगों की संदिग्ध हरकतों पर कड़ी नजर रखते हैं। ये कैमरे प्लेटफॉर्म, टिकट काउंटर और अन्य कई अहम स्थानों पर लगाए गए हैं। अब पानी भरने की प्रक्रिया पर निगरानी जुड़ने से स्टेशन की सुरक्षा और यात्रियों की सुविधा दोनों में सुधार होगा। रेलवे अधिकारियों का कहना है कि यह पहल केवल पानी भरने की प्रक्रिया को

सुरक्षित बनाने के लिए ही नहीं, बल्कि जल संसाधनों की बचत और तकनीकी खामियों की पहचान के लिए भी महत्वपूर्ण है। हाईटेक निगरानी के जरिए स्टेशन प्रशासन जल्द ही किसी भी समस्या का समाधान कर पाएगा और यात्रियों को बेहतर सुविधा सुनिश्चित कर सकेगा। स्मार्ट मॉनिटरिंग सिस्टम की शुरुआत से ही रेलवे को उम्मीद है कि यात्रियों को पानी की कमी, ओवरफ्लो या लापरवाही जैसी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही, यह कदम रेलवे की सुरक्षा प्रणाली को और मजबूत बनाएगा और अवैध गतिविधियों या संदिग्ध हरकतों पर तत्काल नजर रखने में मदद करेगा। सूरत रेलवे स्टेशन पर लगाए गए हाई-रिजॉल्यूशन कैमरों ने न केवल प्लेटफॉर्म और वाटर पाइपलाइन पर निगरानी रखे, बल्कि स्टेशन परिसर में होने वाली किसी भी संदिग्ध गतिविधि को भी तुरंत पकड़ेंगे। रेलवे का उद्देश्य है कि तकनीक का इस्तेमाल करके यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा सुनिश्चित की जाए, और पानी भरने की प्रक्रिया में किसी भी तरह की गड़बड़ी न होने पाए। यह पहल रेलवे की डिजिटल और हाईटेक निगरानी प्रणाली का एक अहम हिस्सा है। आने वाले समय में इस तरह के स्मार्ट मॉनिटरिंग सिस्टम को अन्य बड़े रेलवे स्टेशनों पर भी लागू करने की योजना है, ताकि पूरे नेटवर्क में यात्रियों को सुरक्षित और सुविधाजनक सेवा प्रदान की जा सके। स्मार्ट वॉटर मॉनिटरिंग सिस्टम के जरिए ट्रेन के कोचों में पानी भरने की प्रक्रिया में पारदर्शिता आएगी। अधिकारी रियल टाइम में हर गतिविधि पर नजर रख सकते हैं, जिससे यात्रियों को बेहतर सेवा मिलेगी और जल संसाधनों की बचत भी होगी। साथ ही, रेलवे कर्मचारियों पर जिम्मेदारी का बोध बढ़ेगा और किसी भी लापरवाही की संभावना कम हो जाएगी। इस तकनीक के जरिए न सिर्फ पानी भरने की प्रक्रिया की निगरानी होगी, बल्कि स्टेशन की सुरक्षा और यात्री संतोष भी सुनिश्चित होगा। रेलवे अधिकारियों का मानना है कि यह पहल भविष्य में रेलवे के स्मार्ट और सुरक्षित संचालन का एक महत्वपूर्ण उदाहरण बनेगी।